।। ऊपदेश को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ऊपदेश को अंग लिखंते ||

|| कुंडल्या ||

च्यार पोहोर धंदो करे || सांज हतायाँ जाय ||
झूटी झोडाँ छेड कर || बद बाद करे नर आय ||
बद बाद करे नर आय || पछे सूतो घर जाई ||
होय सपना मे जीव || पडे दोजख के मांही ||
सुखराम दास गुरू देव बिन || यूं नर गोता खाय ||
च्यार पोहोर धंधो करे || सांज हतायाँ जाय ||१||

मनुष्य चार पोहोर याने सबेरे से शाम तक काम धंदा करते और श्याम का चौक पे जाकर गप्पे हकालते झुठी झोड चलाकर आपस मे फिजुल बाते करते और घने रात को घर पे वापीस आते और सोते । निंद आने पे उनके जीव सपने मे जाते और सपने मे दोजख याने संसार के बडे दु:खमे पडते और सपने मे दु:ख भोगते इसी तरह सभी जीव संसार मे आते संसार करते व संसारमे रहते । भेरु,भोपा,मोगा,पित्तर,दुर्गा,सितला,खेतपाल,गोगा, चांवड आदि पापकर्ता देवी देवताओकी भक्ती करते व शरीर छुटनेपे नरक मे पडते व नरक के महादु:ख भोगते । उन मनुष्यो को सुख प्रगट करा देनेवाले गुरुदेव मिले नही इसलीये वे मनुष्य सतस्वरुप के सुख मे न जाते काल के विधी विधी के दु:ख मे पडते ऐसा आदि सतगरु सुखरामजी महाराज जगत के नर नारी को कह रहे है ।।।१।।

कवत ||

पईसो घर गमे सोच || सोच छाळी नही आयाँ ||
खेती भिले निनाण || खिच नही समदी खायाँ ||
खोटी व्हे दिन अेक || सोच बूंटा जिम खावे ||
आरो बिगड जाय || सोच कन नाही बुवावे ||
लाख बात ब्हो सोचरे || नाना बिध नर लोय ||
ध्रग मानव सुखराम के || अेक भजन सोच नही होय ||२||

मनुष्य को उसका पैसा गुम हो गया तो चिंता सताती है । शाम को बकरी घर नही आयी तो फिकीर सताती है । खेती मे फसल नास करनेवाला घास उग गया तो फिकीर होती है । गाँव मे समधी आये और वे घर खिच याने राजस्थान की बडी रसोई खाने नही आये तो फिकीर होती है । फसल के समय बेफिजुल एक दिन भी खोटा हुवा तो फिकीर आती है,विवाह या दसक्रिया का भोजन बिघड गया तो सोच आता है,खेती मे अनाज नही बोया और जिसने अनाज बोया उसकी फसल अच्छी हुई तो मैने खेती नही किया इसकी सोच आती है । इसप्रकार जीव दुसरी लाखो बातो की चिंता फिकीर करता है परंतु काल से मुक्त करानेवाले परमात्मा का भजन करने की फिकीर नही करता ऐसे नर नारी को धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२।।

पईसो तो परखाय ले ।। सोदा करे बजाय ।।
गेल नग्र जाव ताँ ।। ब्हो बिध बूझे आय ।।
समदी करे बमेक सूं ।। चाकर रहे दिल जोय ।।
हंडीयाँ कुं ठमठोर के ।। लेता हे सब कोय ।।
सब कसर किमत का डकर ।। परख करे नर देहे ।।
ध्रग मानव सुखराम के ।। अेक भजन परख नही लेहे ।।३।।

हर नर–नारी पैसा परीक्षा करके लेते है । छोटा–बडा कोई भी सौदा हो बजा–बजा कर करते है । नगर मे किसी के घर जाते वक्त घर का रास्ता हर किसी से भाँती–भाँती से पूछ–पूछकर जाते है । समधी करते वक्त समधी की विवेक से पूर्ण पूछताछ करते है और फिरही संबंध करते है । नौकर नौकरी पे लगने के पहले मालिक दिल का कैसा है इसका खयाल करता है । मिट्टी की हंडी खरीदने के पहले उसे बजा–बजाकर लेते है । इसप्रकार सभी छोटी मोटी वस्तू बारीक–बारीक वस्तु जाँच कर लेते है परंतु भक्ती काल के मुख से मुक्त करानेवाली है या कालके मुख मे ही रखनेवाली है इसकी नर–नारी पारख नही करते और कालके मुख मे रखनेवाले माया की भक्ति चौऱ्यांशी लाख योनी काटेगी यह समजकर धारण कर लेते है ऐसे नर–नारी को धिक्कार है ।।।३।।

नकटी बूंची मांग ।। ताही की बात सुणावे ।।
ब्हो बिध व्हे आधीन ।। दोड वाँके घर जावे ।।
गांव पटेली लेण ।। ब्होत सूंका नर दीनी ।।
न्याँत पाँत के काज ।। बांध जरबी सिर लीनी ।।
याँ बातांरे वास्ते ।। सब नर जुझ्यां जाय ।।
याँ सरोवर सुखराम के ।। हर गुर हे नाय ।।४।।

खुद का या खुद से संबंधित परीवार के सदस्य का विवाह नही होता और कोई भी अच्छी छोड के नकटी(चपटी),बुची(छोटे कानकी)लड्की भी देने को तयार नही रहता ऐसे वक्त जो जरासी भी जचती नही ऐसे नकटी,बुची,कुरुप लड्की का संबंध जिसके हाथ मे है उसके घर दोड दोड्कर बार–बार जाता और आधीन होकर रहता । गाँव की पटेली पानेके लिये जिसके हाथमे पटेली देना है उसे अनेक प्रकार की रिश्वत देता है । अपने जाती–पाती के कार्यो मे कुछ तंटा–बखेडा हो गया और वह तंटा मिटाने के लिये अपनी जाती के सभी पंचो के जूतो की गठरी बांधकर सिरपर रखकर माफी माँगता । ऐसी ऐसी अनेक छुद्र बातो के लिये सभी मनुष्य जुंझते है परंतु जिस गुरु से काल को मारनेवाला हर घट मे प्रगट होता ऐसे गुरु से गुरु प्रसन्न होवे और हर मिले ऐसा कोई व्यवहार नही करता । यह गुरु उपरोक्त मायावी मनुष्यो के प्रसन्न करने के बराबर भी नही है क्या? ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हर नर–नारी को पूछ रहे है ।।।४।।

प्रेम ज्हाँ लग भजन ।। प्रेम खूटाँ सब कारा ।।
माया जब ग्रह सुख ।। धन बिन दु:ख बोहारा ।।
क्रामात जब पीर ।। कळा लग देवत होई ।।
जब लग मन इतबार ।। बात माने जुग सोई ।।
बंधी मुठी लाखरी ।। खूला कोडी मोल ।।
भाव खच्याँ सुखराम के ।। सब नर फूटा ढोल ।।५।।

जबतक परमात्मा से प्रेम है तब तक ही भजन करना यह सार है । परमात्मा से प्रेम खुट गया याने परमात्मा से प्रेम नही है तो भजन करना यह भजन नही होता,यह भजन खोखला है । घर मे माया याने धन रहने पे ही गृहस्थी को गृहस्थी का सुख है,माया न रहने पे याने दरीद्री रहने पे गृहस्थी को गृहस्थी जीवन सुखदाई नही रहता उलटा यह गृहस्थी जीवन अती दु:खदाई बन जाता है । पीर मे जबतक करामात है तबतक वह मनुष्य पीर है करामात नही है तो वह मनुष्य पीर नही है,वह पीर जगत के साधारण मनुष्य के समान साधारण मनुष्य है ।इसीप्रकार जिस देवता मे देवकला है तबतक वह जीव देव है । देवकला खतम् हो गई तो वह जीव देव नही है,अन्य योनी मे गया हुवा प्राण है । जगत मे जबतक मनुष्य के शब्द मे भरोसा है तबतक ही जगत के लोग उस मनुष्य की हर बात मानते है । जैसेही उस मनुष्य के शब्द मे का भरोसा उठ जाता है वैसेही उस मनुष्य की बात जगत का कोई मनुष्य नही मानता । मुठ मे कुछ नही है मुठ बंधी है तबतक उस मुठ की किमत किसी का भी नही लगाते आती परंतु वह मुठ खोल दी तो उस मुठ की किमत कोडी मोल भी नही रहती है । इसीप्रकार शिष्य को सतगुरु से भाव है तब तक शिष्य मे परमात्मा प्रगट होने की आशा है परंतु शिष्य को सतगुरु मे भाव नही है तो शिष्यमे साहेब प्रगट होने की कोई आशा नही है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जिसे सतगुरु से भाव नही है ऐसा शिष्य फुटे हुये ढोल के समान है । फुटा हुवा ढोल कितना भी अच्छा ढोलकिया बजानेवाला रहा तो भी उसे उस ढोल से सुरीला आवाज नही निकालते आता इसी प्रकार सतगुरु को ऐसे शिष्य मे परमात्मा प्रगट नही कराते आता ।।।५।।

पडे दूध मे लूण ।। ढोल रे प्रवा लागे ।।
घडियावळ के राय ।। किरष के पवन कोई बागे ।।
हंडी मेरू होय ।। कंठ मे पडे खटाई ।।
धवण न बंधी ठीक ।। हदफ पर चोट न आई ।।
यूं मन फीको नेक ही ।। पडयाँ न सजे काय ।।
पेम बिना सुखराम के ।। राम गायमा गाय ।।६।।

जैसे दूध मे नमक गिर गया तो सभी दूध नाश हो जाता है ढोलक को पुरवाई याने थंडी

हवा लगी तो ढोलक बराबर नही बजती है,कासा धातू के घड़ियावळ को थोडीसी भी दरार गयी तो उस घड़ियावळ से झनकार बराबर नही निकलती है,खेत के फसल को रोगीट हवा लग गयी तो वह फसल जल जाती है,मिट्टी के हंडी मे छिद्र पड गया तो वह हंडी रसोई बनाने के काम नही आती,कंठ बैठ जानेपर सुर मे गाना नही गाये जाता है,बैरी को मारने के लिये निशाने पर सटीक चोट न लगने के कारण किया हुवा वार किसी काम का नही होता है इसीप्रकार शिष्य का निजमन सतगुरु से फिका पड्ने पे गर्भ मे न पड्ने का काम नही होता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है रामनाम का भजन करने मे प्रेम नही रहा तो रामनाम का भजन किया या नही किया एक जैसे ही है ।।।६।।

जब लग हरसूं हेत ।। प्रेम सू प्रित ना भाई ।।
सगा परूसे खिर ।। साध कूं राब पिलाई ।।
काती मे मोखाण ।। ऊठ समदी घर जावे ।।
साधु द्रसण जाय ।। ब्हो घर काम बतावे ।।
भजन करे सुख सेल मे ।। हासल दे तन खोय ।।
जब लग तो सुखराम के ।। हर सूं हेत न होय ।।७।।

सगा संबधीको खीर बनाके खिलाते है और गर्भसे मुक्त करानेवाले साधूको राब याने छाँछ मे नमक और आटा मिलाके उबालकर पिलाते है तबतक हर से प्रेम प्रित नही है यह समजो । कातीमे खेतीमे से अनाजकी फसल आनेका हंगाम रहता ऐसा समय छोड्कर संबंधीके घर दो चार माह का बालक गुजर गया हो तो भी ऐसा हंगाम छोड्कर बैठने जाता है । परंतु गाँव मे मोक्ष देनेवाले साधू आये हो तो उनके दर्शनको नही जाता और किसीने साधू के दर्शन करने नही आये ऐसा पुछा तो घरपर बहोत काम है ऐसा बताता । इसप्रकार जीव को जगत से प्रेमप्रित रहती परंतु हर प्राप्त करा देनेवाले साधू से प्रेमप्रित नही रहती ऐसा जानो । भजन करनेके लिये पलंगपर आराम से लेटे-लेटे शरीर पर ओढकर बिछोनेपर शरीर को धक्का तक नही लगने देते और बिना चितमन से भजन करते है परंतु खेती के काम मे थोडा बहोत भी हासिल होना होगा तो वहाँ शरीर से पसीना निकालकर मेहनत करते है,घने धूप मे,घने बारीश मे और घने ठंड मे शरीर की पर्वा न करते चितमन लगाकर काम करते है तब तक आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि हर से प्रिती नही,प्रेम नही यह समजो ।।।७।।

चमक लोहो हेत जाण ।। कनक स्होगी संग किया ।।
पय जळ मिल व्हा एक ।। अमल आसक दिल दीया ।।
बासग सुण हेत राग ।। घ्रत दर्द पर जावे ।।
बिष ऋत म्हेरी जाण ।। सुध जाबक बिसरावे ।।
अेसा चित्त मन चाहिये ।। साहेब सूं दिन रात ।।

जब माने सुखराम के ।। हरजन की हर बात ।।८।।

जैसे लोहे के नजदिक लोहचुंबक रखा तो लोहा उस लोहचुंबक को झटके मे चिपक जाता है, सोना कितना भी तपाया हो तो भी पानी होता नही पंरतु उस तपते सोने मे सोहागी डालते ही वह वह सोना पिगलकर पानी पानी हो जाता है,दूध मे पानी डालते ही दोनो एक हो जाते,दूध और पानी अलग अलग नही रहते,अमल भक्षण करनेवाले का अमली वस्तु खाने मे दिल आसक्त रहता है,सर्प को बीन की धुन अती प्यारी लगती रहती,घी खाने का एक रोग होता है यह रोग जिसे होता है उसे घी से बहोत प्रिती होती है,उसे पिपो से घी खाने की चाहना रहती है,ऋतुवंती स्त्री को पुरुष से प्रिती रहती है,इस प्रिती मे वह घर के बडे से बडे मनुष्योकी लाज शरमकी मर्यादा सब भंग कर देती है,इसीतरह जिस प्रकार स्त्री का चितमन अपने पती मे हो जाता है उसीप्रकार हरीजन का चित्त और मन साहेब मे रातदिन रहना चाहिये तब साहेब हरीजन की हर बात मानता है ।।।८।।

औरत हेत भ्रतार ।। मीन जळ प्रीत पिछाणो ।।
अलिचित्त बासा पेफ ।। जोख दर्द पर आणो ।।
ससि चिकोर हेत जाण ।। राग मे मृग बुलाया ।।
पारे वे नेहे नार ।। पतंग दिपक गेहे गाया ।।
अेसा चित्त मन चाहीये ।। साहेब सूं सुण जीव ।।
जब माने सुखराम के ।। हरजन की हर पीव ।।९।।

स्त्री अपने पतीके प्रेममे चितामे जल जाती है,मछ्ली पानी से दूर करते ही मर जाती है,भंवरा कमलके प्रेममे कमल बंद होते समय कमल छोडकर न जाते कमलमे बंद होकर मर जाता है, जोख रोगी के खून के प्रेम मे खून पिकर पूर्ण फूल जाती है और मर जाती है ऐसा जीव का साहेबके साथ प्रेम लगना चाहिये । चकोर पंछी चंद्रमा उगते ही उसको एक टक देखते रहता है,जरासा भी चंद्रमासे नजर नही हटाता ऐसा जीव का प्रेम साहेब से चाहिये । मृगको राग रागीनी से इतनी प्रिती रहती की वह मृग मृग पकडनेवालेके जालमे अटकना कबूल करता है परंतु राग रागीनी सुनना त्यागना नही चाहता है ऐसे ही कबुतर का उसकी स्त्रीसे इतना प्रेम है कि उसे कितना भी दूर देश ले जाकर छोड दिया तो भी वह बिचमे कही न अटकते सिधा अपने स्त्रीके पास आता है । इसीप्रकार पतंगेको दिपकसे इतनी प्रिती रहती कि वह पतंगा दिपक पर गिरकर मरनेको कबूल करता है परंतु दिपक से दूर नही जाता है इसीतरह से जीव ने अपना चित और मन साहेब मे रखा तो ही साहेब हरजन याने संत की हर बात मानता ।९।

साच सील संतोष ।। दया देणो जग माही ।।
मीठा बचन सतोल ।। तप अेसो कोऊं नाही ।।
सत्त बचन सोही जाण ।। न्याव पर बोले सारा ।।

दया दु:ख दे नाय ।। हरक ज्याँ पुन्न बिचारा ।।
सुखराम ईसो पण ब्रत रे ।। ज्याँ का क्हा बखाण ।।
सकळ ज्हान मैमा करे ।। देव लोक लग जाण ।।१०।।

परमात्मा मे पूर्ण विश्वास रखना,सत्य बोलना,सत्य करना,शिलवान रहना,संतोष रखना, दया रखना,निती से चलनेवाले दु:खित पिडीत जीवो पे दया करना,सभी से तोल तोलकर मिठे बचन बोलना इन स्वभाव से चलने सरीखा जगत मे दुसरा कोई तप नही है । छोटे से बडीबात न्याय से बोलता है वह सत्यवचनी है,किसी को भी बडे से छोटा दु:ख नही पहुँचाता वह दयावान है तथा छोटी से बडी वस्तु दुसरे को देते वक्त हर्ष से देता है वह पुण्यवान है ऐसा समजो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की इसप्रकार का पणव्रत याने नित्य का स्वभाव जिस संत का बना है उसके महीमा का शब्दो मे वर्णन नही करते आता । ऐसे संत का सर्व जगत के लोक तथा सभी स्वर्गादिक के देवता महीमा करते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१०।।

सीलवंत सोई जाण ।। नार प्रणी सोई साची ।।
और सकळ माँ बेण ।। संग ब्रते नही काची ।।
हरक बिना ले नही ।। गऊ बेटी नही छेडे ।।
बिन आदर नही जाय ।। घरे काहुं बिन तेडे ।।
सुखराम ईसो पणब्रत ले ।। भजन करे कहुँ तोय ।।
से नर नारी संत हे ।। ओर भिक्यारी होय ।।११।।

विवाह करके लाये हुये पत्नी से जो पती पत्नीव्रत रखकर पत्नी से व्यवहार रखता और अन्य स्त्रीयो को माँ,बहन समजता है वही शिलवंत है । कोई भी हर्ष से हर्षित होकर हर्ष से देना चाहता है फिर भी लेनेवाला अपने गरज पुरता ही लेता है वही संत है । रास्ते मे गाय या गाय के समान गरीब प्राणी बैठे है,लेटे है,सोये है और रास्ते से चलनेवाले को दुजे ओर से रास्ता पार करते आता है फिर भी उन प्राणीयो को छेड्के जाता,उठाके जाता वह मनुष्य संत नही है, जगत के कम समजवाले नर नारी के बराबर है । आदर करके बुलाये बिना किसी के भी घर जबरदस्ती से भोजन प्रसाद के लिये जाता है वह संत नही है वह भिखारी है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।११।।

कुंडल्यो ।।

पिता ध्रम तो सज गयो ।। पुत्र दियो प्रणाय ।।
पुत्र ध्रम तो जब सजे ।। कियाँ बंदगी जाय ।।
कियाँ बंदगी जाय ।। नार ध्रम पत्त कवावे ।।
चाकर रो ओ धर्म अेहे ।। हुकंम पाछो नही आवे ।।
गुर सिष रोई सुखराम के ।। ध्रम कहावे जोय ।।

गुरू तो ऊलट चडावे गिगन मे ।। सिष तन मन अरपे दोय ।।१२।।

पिता ने पुत्र का विवाह कर देने पे पिता का धर्म पुत्र के प्रती पूर्ण हो जाता है पंरतु पुत्र धर्म पिता की उम्रभर सेवा करने पे ही पूर्ण होता है । पिता की सेवा कसर रखकर करने से पुत्र धर्म अपुरा होता है । पत्नी पती के साथ पतीव्रता धर्म से रहे तभी पत्नी नारी धर्म के तत्व से रही ऐसा वेद,शास्त्र,पुराण कहते है । इसीप्रकार नौकर अपने मालिक का आदेश न पलटाते पूर्ण बजाता है तब नौकर अपना पूर्ण धर्म निभाता है ऐसा होता है । इसीप्रकार गुरु और शिष्य का धर्म है गुरु ने शिष्य को बकंनाल से उलटाकर ब्रम्हांड मे चढा देना और शिष्य ने गुरु को ब्रम्हांड मे चढा देने के लिये तन और मन अर्पण करना ऐसा गुरु और शिष्य का धर्म है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१२।।

कवत ।।

काम क्रोध अहंकार ।। धेक नासत मुख निंद्या ।।
मे ते मान मरोड ।। मोहो माया मन संद्या ।।
तामस तर्क त बोल ।। रीस आपो पख खेंचे ।।
कडवा बचन बिरोध ।। बाद क्रमा दिस अेंचे ।।
कळे कसर मन कपट रे ।। दाव गाव ब्हो माय ।।
अे अंग मिल सुखराम के ।। सो नर नरकाँ जाय ।।१३।।

काम,क्रोध,अहंकार,द्वेष,झूठ,परनिंद्या,मै तु,दुजे को हलका समजके मुख मरोडना,कुटुंब परीवार ,धन,दौलत ऐसे माया से मोह लगाकर माया से मन जोडना,तामसी तथा तर्कट याने टेढे बोलना,अपना पक्ष याने अपनी बात अनिती की रही तो भी रिस ला-लाकर खिंचना,हृदय को चुबे ऐसे कड्वे वचन बोलना,सतस्वरुपी संतो से विरोध रखना, सतस्वरुपी संतज्ञान मे वाद विवाद करके निच कर्मो का पक्ष खिंचना,निच कर्मो के लिये कलह करना,साहेब की भक्ति समजने मे कसर रखना,मन मे हर छोटी-मोटी वस्तू पाने के लिये दुजो से कपट करना,खुद के माया के स्वार्थ के लिये अनेक प्रकार के दाव और घाव रचना ऐसे निच स्वभाव जिसके हृदय मे भरे है वे नर नारी अती दु:ख पडनेवाले ऐसे ८४ प्रकार के नर्क मे जा पडेंगे ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१३।।

हम हरक हक्कीम ।। दु:ख ओराँ घर चिंते ।।
तष्कर चोर तबीब ।। झगड साचे सूं जीते ।।
बके झके बिन रीत ।। मेर मरजाद न माने ।।
अँत आंतर मन सोच ।। क्रम बंधे नित छाने ।।
बेण नेण कर पावले ।। निस दिन उसभ कमाय ।।
अे अंग सुण सुखराम के ।। सेज नर्क ले जाय ।।१४।।

ब्राम्हण और वैद्य औरो के घर दु:ख पडे यह चिंतते है। ब्राम्हण यजमान मरने पे हर्ष करता

है तो वैद्य रोग फैलके रोग से लोग दु:खित होवे यह चिंतता है। व्यभिचारी,चोर, वैद्य झगडा करके स्वयम् झूठे होने पे भी सच्चेको जगतके आँखो में जितते है । जिसके मनमे अनितीसे निचकर्म करनेकी अती आतुरता और बिचार रहते है वे छुपकर नर्कमे पडने सरीखे कर्म बांधते है। वे आँखोसे,बचनोसे,हाथोसे और पैरोसे रात-दिन निच कर्म कमाते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जीवके ये सभी निच स्वभाव नर्कमे सिधा ले जाते है ।।।१४।।

झूट नीत खोटी चले ।। मुख अंतर रहे और ।।
बोल बचन सब डाव सूं ।। करे करम कठोर ।।
धंदो इधक अखूट ।। फेर आगो मन राखे ।।
लालच त्रस्ना ब्होत ।। चाय झूटी मूख भाखे ।।
नुगरो ग्यान ऊथाप ।। साध संगत नही भावे ।।
अे अंग मिल सुखराम ।। नर्क नर माही मिलावे ।।१५।।

जो मुख के झूठे है,जिनकी नियत खोटी और बुरी चाल है,हृदय मे और बात और मुख मे कुछ और बात मतलब मुख से बोलते एक और हृदय मे दुसरी रखते है,बचन डावपेंच से बोलते है, कर्म अती कठोर करते है,धंदा पहले से बहुत ही है मतलब खुद से हो नही सकता इतना है फिर भी आगे से आगे नया धंदा बढाने के लिये उत्सुकता से मन रखते है,लालच बहोत है, तृष्णा बहोत है,मन मे माया की चाहना बहोत है तथा मुख से पलपल झूठ बोलते है तथा जो नुगरे है याने जिसे सतस्वरुपी गुरु नही है तथा जो सतस्वरुप ज्ञान को उथाप देते है, सतस्वरुपी साधू की संगत नही भाँती,जहर के समान लगती है ऐसे स्वभाववाले नर नारी नर्क मे जाकर पडते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१५।।

जरीयो अहार ऊखाल ।। मरे माखी अरू मारे ।।
मूसो चोरे बाट ।। जरे आपई घर जारे ।।
मकडी मांडे जाळ ।। दगे ब्होता जीव खावे ।।
अजा खाल लोहा गळे ।। किया सो अपणा पावे ।।
बाँस जळे बन जाळ ।। ब्याल को काळ छछुंदर ।।
नापट नाक कटाय ।। करी करता बिन कदर ।।
बाळ क्रद काजी बूई ।। खिणत खाड ओरां पगाँ ।।
सुखराम दास संसार मे ।। दगा नही किसका सगा ।।१६।।

(दुष्ट स्वभाव के मनुष्य,दुसरो को कष्ट देने मे अपना मरण आयेगा यह समझकर भी,दुसरों को दु:ख देना नही छोडते है ।)दगा किसी का सगा नही होता है । तो भी ये दुसरो से दगा करते है । मक्खी यह दुसरो के भोज्य पदार्थ मे पडकर,खाया हुआ आहार

उलटा देती है और मक्खी स्वयं भी मरती है । और दुसरों को भी त्रास देती है । चूहा दीपक की बत्ती(पुराने तरह के दीये,(दीपक)जिसमे एक तरफ से बत्ती जलती रहती है और दूसरी तरफ दीपक के बाहर बत्ती निकली हुयी रहती है । वह बत्ती चुहा)लेकर भागता है और स्वयं भी जलता है और दुसरों के घर को भी जलाता है । और मकडी यह जाल फैलाती है ।(और उस जाल में)दगा से बहुत से जीव(फंसाती है)और उसे खाती है ।(परन्तु वही एकाध बार,उस जाल मे पैर फसने से मर जाती है ।)(लोहे की छुरी से बकरे को काटा),उसी बकरी की चमडी से(लोहार की भाती बनी,उस भाती से)लोहा गलाया जाता है । जैसा करता वैसा पाता है । जंगल के बास(हवा से एक दुसरे से घिस कर,उस बांस से अग्नी उत्पन्न होती है । वह अग्नी)उस बाँस को जलाती है । और दुसरे वनों को भी जलाती है । सर्प छछुंदर को(पकडता है ।)(परन्तु वही छछुंदर)उसका काल हो जाती है ।(सर्प ने छछुंदर को पकडकर यदी छोड दिया,तो सर्प अंधा हो जाता है । और यदी निगल गया,तो उस सर्प को कुष्टरोग हो जाता है । इस तरह से सर्प की दोनो तरह से मृत्यु होती है ।) दृष्टांत:-१) एक राजा के पास पंडित था,वह पंडित प्रति दिन,राजा के यहाँ आकर कथा कहता था । और राजा कथा सुनकर,उसे पाँच रूपये की चिठ्ठी,खजान्ची के लिए दे देता था । उसी राजा के पास एक नाई(हजाम)था । वह भी राजा की चाकरी के लिए आता था । कभी-कभी उस कथा पढने वाले पंडित की भी,हजामत बना देता था और पंडित से मांगता था,कि मुझे कुछ दो । परन्तु पंडित का कुछ देने का मन नही होता था । इसलिए वह पंडित उसे और कभी दे दूँगा,ऐसा कहता था । इसलिये उस नाईने विचार किया,की इस पंडित को यहाँ से निकाल देना चाहिये । ऐसा विचार किया । और ब्राम्हण की हजामत बनाने के लिए एक दिन गया । हजामत करते समय उससे(ब्राम्हण से) बोला,की राजा साहब कहते है,कि पंडितजी पोथी अच्छे पढते है,परन्तु पोथी पढते समय, उनके मुख से थूक उडता है । वह पोथी पर पडते रहता है । इसलिये तुम पोथी पडते समय, मुँख के सामने(आगे)कपडा लगाते जाओ । पंडित ने विचार किया,की कौन जाने,मेरा बुढापा है,कदापी थूक उडता ही होगा । यह बात सत्य मान ली । वह पंडित राजा के यहाँ कथा पढते समय,मुख के आगे गमछा रखता था । आगे वही नाई राजा की हजामत बनाने के लिए गया । तब हजामत करते समय राजा को बोला,की यह ब्राम्हण कहता है,कि क्या करू? पेट के लिये राजा के घर जाकर,राजा को कथा सुनानी पडती है । परन्तु यह राजा मांस भक्षण करता है । और दारू पिता है । इसकी मुझे बहुत गन्दी बदबु आती है । और उसके पास बैठने की मुझे घृणा होती है । ऐसा यह ब्राम्हण कह रहा था । तब राजा बोला,की ऐसा है क्या?आज देखूँगा । पोथी पढते समय राजा ने देखा,तो ब्राम्हण सही में,नाक मुँह के आगे कपडा रखकर,पोथी पढ रहा था । इसलिये राजा को इसका बहुत क्रोध आया । और प्रति दिन

के जैसा,खजांची को पांच रूपये की चिठ्ठी जो लिखता था । उसी तरह उस दिन लिखा,कि आज इसे कुछ न देकर,इसकी नाक काटकर,खजाने में रख दो । ब्राम्हण यह बात समझा नही,की इस नाई ने ऐसा दगा किया है । और नाई समझा,कि आज यह यहाँ उखड जानेवाला है । तो आज सक्त तगादा करके,हजामत के पैसे माँग लेना चाहिये । इसलिये वह नाई,उस ब्राम्हण के बाहर निकलते ही आगे आ गया और बोला,की तुमको टालते हुए बहोत दिन हो गये । परन्तु आज लिए बिना आगे जाने नही दूँगा । ब्राम्हण बोला,कि फिर कभी दे दूँगा । परन्तु नाई ने कुछ सुना नही । तब उस ब्राम्हण ने,राजा की दी हुअी मोहर बंद चिठ्ठी देकर,नाई से बोला,कि आज के दिन की यह चिठ्ठी तू ले । ऐसा कहकर उस नाई को चिठ्ठी देकर,ब्राम्हण घर चला गया और नाई चिठ्ठी लेकर खजांची के पास गया और उस खजांची को चिठ्ठी दी । खजांची ने लिफाफा फोडकर चिठ्ठी देखी,तो उसमे राजा का हुकुम देखा की उसकी नाक काट लो । तब उस खजांची ने उस नाई को अन्दर बुलाया और हाथ मे चाकू लेकर उसकी नाक काट लिया । दृष्टान्त २:–इसी तरह एक शहर मे एक काजी था । वह बादशाह के यहाँ हमेशा जाता था । और कुराण पढकर बताता था । वह काजी मर गया । उसके पिछे उसका लडका छोटा था । इसलिये उसकि जगह दुसरा काजी रखा गया । वह दुसरा काजी,हमेशा बादशाह के यहाँ घोडे पर बैठ कर जाता था । रास्ते मे गाँव के बच्चे खेलते थे । वे खेलते हुए रास्ते मे गढ्ढे खोदते थे । घोडे पर बैठ कर जाने वाला काजी,उन बच्चो को कहता था,क्यो रे,तुम रास्ते मे गढ्ढे क्यो खोदते हो । ऐसा धमकी देने लगा । तब वह पहले काजी का लडका,उन लडको में खेल रहा था । वह लडका बोला,कि जो खोदेगा वह गिरेगा,तुम्हे उससे क्या करना है । उस काजी से और उस काजी के लडके मे कुछ बातें हुअी,तब वह लडका काजी को होशियार लगने से, उसे अपने यहाँ नौकरी पर रख लिया । और उस लडके को यह नोकरी दी,की मै दरबार मे जाता हूँ ,तब मेरे साथ में चलकर मेरा घोडा और जूता सम्भालना । इस तरह वह लडका काजी के साथ प्रतिदिन जाने लगा । काजी दरबार मे जाता तो था,परन्तु कुछ जानता नही था । दरबार मे उससे जब कुछ प्रश्न पूछा जाता,तो वह कहता था,कि मैं कुराण देखकर बताऊँगा । परन्तु वह कुराण जानता नही था । और वहाँ पूछे गये प्रश्न,यह दुसरा काजी का लडका सुनकर,उसका क्या उत्तर है,यह काजी को बता देता था । वही उत्तर दुसरे दिन काजी दरबार मे जाने पर बताता था और ख्याती पाता था । लडके ने विचार किया,की इसके सभी काम तो,मेरे अक्कल से ही चल रहे है,यह तो कुछ भी जानता नही । दुसरे दिन बादशाह ने काजी से पूछा,खुदा क्या खाता है?और पहनता क्या है?और रहता कहा है? तब काजी बोला,मै कुराण देखकर,इसका उत्तर दूँगा । वह काजी घर आकर,उस लडके से पूछा,की खुदा क्या खाता है? तब लडका बोला,कि खुदा गम खाते रहता है । फिर पुन: पूछा,कि पहनता

क्या है ?तब लडका बोला,कि सभी की शरम पहनता है । और पूछा,कि खुदा रहता कहा है? तब लडका बोला,कि भक्त के हृदय मे रहता है । दुसरे दिन काजी दरबार मे जाने लगा,तब गाँव के बच्चो ने पुन्हा रास्ते मे गढ्ढे खोदे थे,तब उन बच्चो पर काजी क्रोधित हुआ,तब पहले काजी का लडका बोला,जो खोदेगा वो गिरेगा,आपको क्या करना है । आगे दरबार मे बादशाह ने पूछा,खुदा क्या खाता है? इसका उत्तर दो । काजी बोला,खुदा गम खाता है । बादशहा बोला,खुदा पहनता क्या ? काजी बोला,सभी की शरम पहनता है । और बादशहा काजी से बोला,की रहता कहाँ है,तब काजी बोला,की भक्तों के हृदय मे रहता है । फिर बादशाह बोला, खुदा क्या करता है ? इसका उत्तर इसी समय दो ? तब वह काजी,उस लडके की तरफ देखने लगा । और बोलने के लिये इशारा किया । यह बात बादशहा से छुपी नही रही,तब बादशहा समझा,कि सभी करामत उस लडके की है । तब बादशाह उस लडके से बोला,कि क्यों रे,तुम इस प्रश्न का उत्तर देते हो क्या? तब लडका बोला,हा खुदावंत दे सकता हूँ । बादशहा उसे उत्तर देने को कहा,तो(पहले काजी का लडका)बोला,कि यहाँ से मै उत्तर नही दूंगा । उत्तर देने की जगह बैठाओगे,तब दूंगा । तब उस काजी को बादशहा बोला,की तुम वहाँ जाकर घोडे और जूते सम्भालो और उस लडके को काजी की जगह बैठाया । तथा पूछा,खुदा क्या करता है,वह अब बोलो । वह लडका बोला,आपको दिखा नही क्या? खुदा काजी का पाजी और पाजी का काजी करता है और यह बात अभी आपके सामने हुयी । यह जो काजी था,उसे पाजी किया और मै जो पाजी था,उसे काजी कर दिया । यह खुदा ने ही तो किया,की और कोई दुसरे ने । यह बात सुनकर,काजी मन मे बहुत जला । और घोडा लेकर निकला, वह एक कसाई के घर आकर,उस कसाई से बोला,कि तुम एक गढ्ढा खोदकर तैयार कर,मै एक लडके को मांस लाने के लिए भेजता हूँ । उसे जान से मारकर गढ्ढे मे दबा दो । ऐसा कहकर काजी घर चला आया । उसके बाद वह लडका भी,बादशहा के यहाँ सम्मान पाकर, बादशहा से आज्ञा लेकर घर आया । उस लडके को देखते ही,काजी तो मन में बहुत जल रहा था,परन्तु उपर से खुषी प्रदर्शित किया । और उसे बोला,की कसाई के घर से मांस ले आ । वह लडका कसाई के और जाने के लिए निकला,रास्ते मे उस काजी का लडका,बराबरीके लडकों में खेल रहा था । उस काजी के लडके के उपर दाव आने के कारण,उसे दूसरे लडके चीडा रहे थे । और कष्ट दे रहे थे । तब इस लडके को उस काजी के लडकेने देखकर, उससे(पहले काजी के लडके से)पूछा,की तूं कहाँ जा रहा है । पहले काजी का लडका बोला, कि मै मांस लाने के लिये,कसाई के घर जा रहा हूँ । तब वह काजी का लडका बोला,की मैं कसाई के यहाँ से मांस ला देता हूँ । तू मेरा दाव दे दे । तब यह लडका,वहाँ लडकों का दाव देने लगा । और काजी का लडका कसाई के घर गया । वहाँ जाते ही उस कसाई ने,गढ्ढा तो पहले से ही खोद कर रखा था,उस लडके

के आते ही,उस काजी के आदेशानुसार,जान से मार कर उसे गढ्ढे मे डालकर दबा दिया । कुछ समय बाद यह लडका(पहले काजी का), अपना दाव देकर घर गया । घर आने पर उससे काजी ने पूछा,अरे,मांस क्यो नही लाया । तब वह लडका बोला,मांस लाने के लिये तो आपका लडका गया है । और मुझे तो उसने उसके उपर आया हुआ दाव,देने को कहा था । इसलिये दाव देकर घर आया हूँ और मांस लाने के लिए आपका लडका गया है । यह सुनते ही,काजी जोर से रोने लगा । और हिचकी लेने लगा,तब यह लडका बोला,कि मै कहता था,कि जो खोदेगा वो गिरेगा । तो तुमने कुछ खोदा क्या? इसलिये सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि दगा कोई भी मत करो,दगा किसी का भी सगा नही है । ।। १६ ।।

क्हो कुण जाळे पनंग ।। जळे अपणी अंग ज्वाळा ।।
क्रम बिडो के बंस ।। करे मुढ मर्कट चाळा ।।
बिछणी के सुत ब्रछ बेल ।। पोखत जीव सोषे ।।
आखर सीख अग्यान ।। बिर चूंढे इण दोषे ।।
कुण दु:ख देवे दुसरो ।। सींग भार सांमर मरे ।।
सुखराम पाप पिंड पोषताँ ।। यूं अकाज जीव को करे ।।१७।।

सर्प के शरीर में विष की ज्वाला से,उसका शरीर जलता रहता है । उसे दूसरा कोई नही जलाता है,उसी के अन्दर के विष से वह(सर्प)जलता है । बन्दर के शरीर को कवच(एक प्रकार का जंगली फल)लग जाने पर,उसे खुजली होती है,तब वह बन्दर अपने शरीर को खुजलाता है,(उसे खुजलाते हुए देखकर),दूसरे भी बन्दर उसके साथी,उसे खुजलाने लगते है और खुजला-खुजला कर,उस बन्दर को मार डालते है । तो उससे ही उत्पन्न हुअी खुजली से बन्दर मरता है । वैसे ही बाँस पहाडो पर एक दुसरेसे रगड खाकर,उसमे आग उत्पन्न होती है । वे बाँस अपने अन्दर से ही उत्पन्न हुअी,आग से जल जाते है । इसी तरह बिच्छू से पैदा हुए, बिच्छू के बच्चे,वह बिच्छू उन्हे पोसती है और वही बच्चे(उससे ही उत्पन्न हुए)उसे (अपनी मां को)खा जाते है । अमरवेल(अधरवेल)पेड के उपर बढती है । और उस पेड के रस शोषन करके,उस पेड को सुखा डालती है । तो वह उस पेड के रस से ही पोसी हुयी(पाली हुयी) वेल,उसी पेड को सुखा देती है । डाकीनी,अज्ञानता में डाकिनी का मंत्र(अक्षर)सीख लेती है । (उस अक्षर के योग से उसमे बीर आकर,उस डाकिनी को कष्ट देते है और अपना भक्ष माँगते है । वह उसके अन्दर के ही(डाकीनी के ही)अक्षर से,उसी को तकलीफ देते है । तो दूसरा कोई दुख नही देता है । अपने ही पाप के कर्मो से(अपने अन्दर ही पैदा हुए पापों से),अपने को ही दु:ख होता है । जैसे सांबर के सिर पर सींग उगती है । (उसकी शाखायें निकल कर बडी हो जाने पर,उस सींग के)भार से वह सांबर मरता है ।(जब तक सींग छोटी थी,तब तक उस सींग

का बोझ लेकर दौडते रहा,परन्तु वही सींग जब बडी हो गयी,फिर उस सांबर को उसका बोझा सहन नही होता है,तब वह गर्दन टेढी करके सींग नीचे रख देता है । एक बार नीचे रखी हुयी सींग,पुन: उससे उठाये जाता नही और वह सांबर वही पडा हुआ रहता है । तब दूसरे प्राणी,मनुष्य या जानवर उसे मारकर खा जाते है ।) इस तरह से अपने अन्दर से ही उत्पन्न हुए पाप कर्म,अपने अन्दर ही रहकर जीव का अकाज करते है । ।।१७।।

पेफ हुवा पाषाण ।। पीड प्रल्हाद ज पाई ।।
समझ्याँ पुरसाँ दोस ।। हिर बिणस्यो रे भाई ।।
बडी अवल्या अेक ।। सर्प तिणका तन कीना ।।
कवराँ पढी कुराण ।। साच साहेब कूं दीना ।।
सुण कर आवाज फकिर ।। हाक हुरमा चल आई ।।
लाख रूपया रोख ।। दे साहेब घर मांई ।।
बन भूलो सुलतान ।। अचंबा अेसा पाया ।।
अन पाणी की प्यास ।। सांई प्रलोक रचाया ।।
पोळयाँ बोल्या प्रेस्ता ।। अे दरबार हुर्मा तणा ।।
क्रोड मोल सुखराम के ।। समज्याँ दोसण सो गुणा ।।१८।।

(जैसे एक बार हिरणकश्यप ने सभी को ऐसा आदेश दिया,की प्रहलाद को सारे गाँव मे से जुलूस निकालो । उस समय,जिसके हाथ में जो आये,या हाथ में जो कुछ भी होवे,उसी से प्रहलाद को मारे । यानी जिसके हाथ में पत्थर आया,तो पत्थर से ही मारे । ईट आयी,तो ईट से ही मारे । कुल्हाडी रही,तो उसी से मारे । हंसुवा रहा,तो हंसुवा से ही मारे । लाठी रहने पर,लाठी से मारे । यानी जो कुछ भी हाथ मे हो,या जो कुछ भी हाथो में आया,उसी से मारे । जो कोई प्रहलाद को नही मारेगा,तो उस का सिर काट दिया जायेगा । यह बात सुनकर प्रहलाद की मां कयाधू ने सोचा,की मै अपने बेटे को पत्थर से कैसे मारूँ । उसे पत्थर लगने पर जख्म होगी और वह मन मे भी जानती थी,की प्रहलाद राम का नाम लेता है । उस नाम के योग से उसे कुछ भी नही होगा । ऐसा जानकर भी उसने विचार किया,की मेरे सामने जब प्रहलाद आयेगा,तो मै उसे ईट कैसे मारूंगी? इसलिए उसने तडके अपने आँचल में फूल ले लिया,की मेरे सामने प्रहलाद आयेगा,तब उसे मारूंगी । यानी हिरण्यकश्यप का आदेश ऐसा है, कि जिसके हाथ मे जो आयेगा,उसी से प्रहलाद को मारेगा । इसलिए प्रहलाद को फूल मारने से चोट भी नही लगेगी । प्रहलाद सुबह से ही गांव मे मार खाते हुए,कयाधू के महल के सामने आया । जब प्रहलाद को जुलूस कयाधू के सामने आया,तो कयाधू ने प्रहलाद के शरीर पर फूल फेकें । फिर सायंकाल तक घूमना पूरा हुआ । तब प्रहलाद अपनी मां के पास आया,तब उसने दुलार कर पूछा,की आज तुम्हे दुख हुआ होगा । तब प्रहलाद बोला,की दूसरों के मारने से तो

मुझे कुछ भी पीडा नही हुयी, परन्तु तुमने जो-)फूल मारा,वे पत्थर होकर उससे मुझे बहुत पीडा हुयी । (तू जानती थी,कि हजारो मनुष्यों ने लाखो प्रहार मेरे उपर किए,तो उससे मेरा कुछ हुआ नही,तो तू भी पाँच पत्थर मार दी होती,तो उससे मेरा क्या हो गया होता । तो तू मेरी पीठपर देख ले,फूल मारी उसी जगह पर बेंडसाट(काला निशान)आये की नही,दूसरे कुछ एक भी नही हुए,कारण तूं समझते हुए भी,यह काम किया ।)(उसी तरह से एक राजा के यहाँ महलमे,रानीके पास एक देवनामी हीरा था । उसकी किमत करोडो रूपये की,वह अनमोल था । उसे एक दासी ने चुरा लिया । वह हीरा महल से बाहर कैसे ले जाया जाय,इसलिये उस दासीने वह हीरा,पैर के नीचे पट्टी से बाँधकर,पैरो मे जूते पहनकर,एक जौहरी के यहाँ गयी । और जोहरी को दिखाकर बोली,कि यह हिरा मै चुराकर लायी हूँ ,तुम इसे कितने मे लोगे? जौहरी ने देखा,की यह हीरा तो देवनामी है और उसको उसकी किमत यदी बताई तो,यह हीरा मुझे नही मिलेगा । दुसरा कोई ले लेगा । इसलिए उस जोहरी ने हीनभावना से,उससे कहा,की यह क्या खोटा हीरा लाई हो? ऐसा बोलकर हीरा फेक दिया । फेकते ही वह हीरा फुट गया । और उसके टुकडे-टुकडे हो गये । तब वह जोहरी रोने लगा,कि हाथो में आया हुआ देवनामी हीरा,मैने अपने हाथो गवा दिया । तब वह हीरा उपर जाते-जाते बोला की,अब क्यो रोता है ?मै क्या फेंकने लायक था क्या? तब वह जौहरी बोला,कि इस दासी ने तो तुझे पैरो के नीचे बाँधकर,जूते मे डालकर लाया था । तब तू क्यो नही फूट गया । तब वह हीरा बोला,कि यह दासी मुझे जानती नही थी । और तुम जानते थे,कि यह हीरा देवनामी है । तुमने जानबुझ कर मेरा अपमान किया,वह मुझसे कैसे सहन होगा?)इसी तरह एक अवलिया थी । (वह लोगों को उपदेश देती थी,कि किसी की भी कौडी की भी जिन्नस(वस्तु),मालिक के परवानगी के बिना लो मत । उस अवलिया का देहान्त हो गया । तब उसके बच्चो ने कब्रस्थान मे दफन करने के लिये ले गये । उस देश की ऐसी रीती थी कि,मुर्दा दफन करते समय,उसके साथ कुछ द्रव्य रखते थे । और वह द्रव्य कब्रीस्तान मे रहनेवाले फकीर,बाद मे निकाल लेते थे । वे गाडे हुये द्रव्य,वहाँ के फकीर निकाल लेते है,यह बात जाहिर थी । इसलिये उसके बच्चों ने,उस कब्रिस्तान के फकिरों को बुला कर कहा,कि हम अपनी माँ की लाश के साथ,जितने द्रव्य रख रहे है,तुम हमारे पास से उतना ले लो । परन्तु बाद मे तुम हमारी माँ की कब्र,खोलिएगा मत । तब वे फकिर बोले,की हम द्रव्य के लिए कब्र खोलते है,यदी तुमने हमे उतने द्रव्य दे दिये,हम कब्र किसलिये खोलेंगे ? इस से उन फकिरो ने उसके लडके के पास से,कब्र नही खोलने का करार करके द्रव्य ले लिये । आगे कुछ दिनो बाद,उन फकिरो ने सोचा,यह कि इसके साथ का रखा हुया द्रव्य,क्यों गवाना । इसके लडके तो देखने के लिये आते भी नही है । कब्र खोलकर पुन:,जैसी की तैसी कर देंगे । ऐसा सोचकर,रात को उन फकिरो ने,उस

अवलिया की कब्र के मुख पर से पत्थर हटाया । उस समय उस कब्र में वह अवलिया और सामने दोनों तरफ दो समया(दीपक)जल रहे थे । और बीच मे धर्मग्रन्थ रखा था । और वह अवलिया धर्मग्रन्थ पढ रही थी । ऐसा दृष्य उन फकीरों ने देखा और देखकर घबराये,तब वह अवलिया उन फकीरों को बोली,घबराओ मत,इधर आओ । वे फकिर नजदीक जाकर देखते तो,उसके शरीर पर हजारो साप सुई(ओटनी)लगी हुयी थी । तब फकीर उस अवलिया से बोले,कि माते,तू ऐसी होकर भी,तेरे शरीर पर यह क्या है?तब वह बोली,किसी की कौडी की भी वस्तु,मालिक के परवानगी के बिना लो मत । यह मै जानती थी और दूसरो को भी यह उपदेश बताती थी । परन्तु मेरे घर मे दुसरे पडोसी का छप्पर आया हुआ था । उसमें से एक सींक मैं प्रतिदिन दात खोदने के लिये लेती थी।)उन सीकों का सापसुव्या(ओटनी)हो गयी है ।(तो तुम जाकर मेरे बच्चों को बोलो,कि जिस पडोसी का छप्पर अपने आंगन मे आया है । वह पडोसी जितना मांगे उतना पैसा देकर,गुनाह माफ करा लो । तब वे फकीर बोले,हमने कब्र खोलने का,तुम्हारे बच्चों को बताने पर,वे हमे मार डालेंगे । कारण हम कबर नही खोलेंगे,ऐसा उनसे करार किया है । तब वह अवलिया बोली,कि और तुम्हे मारे नही,ऐसा मै बोली हूँ ,ऐसा कहना । फिर तुम्हे नही मारेंगे । फिर दिन निकलने पर फकिर डरते-डरते,उसके बच्चों के पास गये । हमसे अपराध हुआ है,उसे माफ करने के लिए तुम्हारी माँ ने,तुम्हे संदेश भेजा है । और सापसुई की सारी हकीकत बताई । तब उसके बच्चो ने पडोसी को बुलाकर कहा,कि तुम्हारा छप्पर हमारे आंगन में आया हुआ है । उसमे से दात खोदने के लिये,प्रतिदिन हमारी मां एक सींक लेती थी । उन सीकों के कुछ पैसे लो । और गुनाह माफ कर दो । तब वह पडोसी बोला,कि घास की सींक का मै क्या पैसा लूँ? मैं पैसा नही लूँगा और गुनाह ऐसी ही माफ कर देता हूँ । उस कब्रिस्तान के फकिर कब्रिस्तान में ही रहते थे और कब्र खोदकर,बांधकर,पहले से ही तैयार रखते थे । कब्रिस्तानमे मुर्दा आने पर,अपनी कूवतके अनुसार,कबर छोटी-बडी बिकत लेकर, उसमे मुर्दा रखकर,कब्र का दरवाजा चूने से बंद करते थे । कब्र मे मिट्टी नही डालते थे । ऐसा उस देश का रिवाज था और फकिरों का कब्र खोदने और बाँधने का धंधा था ।(इसी तरह एक अवलिया फकीर था । वह मिट्टी का अपने से उठाया जाय,ऐसा एक घर बनाता था । वह घर हाथ मे लेकर,गांव मे फिरते हुए,कोई साहेब का घर खरीद लो । ऐसा आवाज करते हुए,घूमा करता था । किसी ने घर की कीमत पूछी,तो लेने वाले की कूवत के प्रमाण से,कीमत बता कर घर बेचता था । यह घर खरीदने से क्या होता है? ऐसा किसी ने पूछा,तो वह कहता था,कि यह पर घर खरीदने वालो को,परलोक मे घर मिलता है । इस तरह से वो प्रतिदिन घर बनाकर बेचता था । एक दिन मिट्टी का घर बनाकर,बादशहा की बैठक सामने जाकर बोला, साहेब का घर खरीद लो,ऐसा जोर से बोला,तब बादशहा बोला,कि इसकी किमत

क्या है? तब फकीर बोला,की कीमत थोडी है,सिर्फ एक लाख रूपये । तब बादशहा बोला,मै एक लाख रूपये देता नही और मुझे घर चाहिये नही । आगे वह वहाँसे,साहेब का घर ले लो,ऐसा आवाज देते हुए,बादशहा के महल के नीचे आया,वहाँ इसकी(फकीर की)आवाज सुनकर,बादशहा की हुरम(बेगम)आयी और घर की कीमत पूछकर,एक लाख रूपये फकिर को दिया । और घर खरीदकर कोने मे रख दिया । आगे कुछ दिनो बाद,बादशहा शिकार पर गया । बादशहा ने शिकार के पिछे घोडा दौडा दिया । तब शिकार पहाड मे जाकर अदृश्य हो गया । बादशहा वन मे रास्ता भूल गया । प्यास से व्याकूल होकर,वही गिर गया । (उसका जीव छटपटा कर,प्राण निकल गया)और उसे परलोक दिखाई देने लगा । बादशहा को परलोक मे भव्य महल दिखाई देने लगा । वह महल सोनेका था । उसमे हीरे,लाल,पुखराज,माणिक,मोती आदी लगे हुए थे । ऐसा भव्य महल देखकर,सोचा कि,यहाँ कुछ खाने पिने को मुझे मिलेगा । उस मकान के पास जाकर,बादशहा ने द्वारपाल से पूछा,यह मकान किसका है?(तब)उस द्वारपाल ने उसी बादशहा का नाम लेकर,उस फलांनी हुरम(बेगम)का है ।(उस बेगम ने फकीर के पास से,एक लाख रूपये का घर खरीदा था । उसी घर के बदले मे ये घर तैय्यार हुआ था । तब वह बादशहा, अपनी ही बेगम का नाम सुनकर,घर मे जाने लगा । तब द्वारपाल ने उसे अन्दर जाने को मना किया । और कहा,इस मकानमे वह बेगम ही जाएगी । तुम्हारा इस महलपर अधिकार नही है । फिर उस बादशहा का जीव पुनः शरीरमे आया । और इधर उसके साथी लोग भी उसे खोजते –खोजते उसके पास आये । और बादशहा को लेकर राजमहाल मे गये । आगे दूसरे दिन वही फकीर,मिट्टी का घर बनाकर,हाथ मे लेकर,साहेब का घर ले लो,साहेब का घर ले लो,ऐसा बोलते हुए रास्ते से निकला । तब बादशहा उस फकीर की आवाज सुनकर,स्वयं खुद जाकर उस फकीर से बोला,साई साहेब,मुझे साहेब का घर दो । किमत क्या लोगे,बोलो? तब फकीर बोला,इस घर का सौ लाख रूपये लूँगा । तब बादशहा बोला,उस दिन मुझे एक लाख रूपये बताये थे । और मेरी बेगम को भी एक लाख रूपये मे घर दिये थे । मुझे एक कोटी रूपये, कैसे कह रहे हो?तब फकीर बादशहासे बोला,कि तुम देखकर आये हो,इसलिये),समझा । जिसको यह समझा,उसे सौ गुना दोष(गुनाह)होता है ।(इसी तरह मै भी तुमसे सौ गुना रूपये लूँगा) ।। १८ ।।

मेले मन का जीव ।। पीठ पर निंद्या ठाणे ।।
मुख पर बात बणाय ।। सुगम आछी कर आणे ।।
आणंद होय खुसीयाल ।। सुख काहुं के आवे ।।
धेकी नर मुरझाय ।। अंतर ब्होतो दुःख पावे ।।
दगा बाज मुख बूंदरे ।। दिल खुल करे न बात ।।

नित पास्यां सुखराम के ।। गुंथत अेनिस जात ।।१९।।

मैलै मन के जो जीव है । वे मुख के सामने मीठा–मीठा बोलते है । और अच्छी बात बनाकर कहते है । और बात सुननेवाले को भायेगी ऐसी सुगम करके अच्छी बताते है । और पीठ पीछे नींदा करते है । और मुख पर(सामने)दूसरों को मीठी लगे,ऐसी बात बनाकर कहते है । दुसरे किसी के भी घर आनन्द होने पर खुषीहाली हुयी,किसी को भी सुख हुआ,तो द्वेषी(मत्सर करनेवाला)(द्वेष करनेवाला),मनुष्य मुरझा जाता है । और अपने मन मे बहुत दुख पाता है, (कि इसका ऐसा अच्छा काम क्यों हो गया?और मेरा क्यों नही हुआ?इस तरह से द्वेष करता है ।) दगाबाज मनुष्य मुख बंद करके रहता है । खुले मन से बात नही करता है ।(और मन में)फासा(जाल)गूंफते रहता है ।(की इसका ऐसा कर दिया जाय । उसका वैसे कर दे । ऐसे–ऐसे घात सोचता रहता है । उसे फासा गुंफना ऐसा कहते है ।)ऐसे फाँसे गुंफते हुए,उसके रात दिन व्यतीत होते है,ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१९ ।।

जात जात के माय ।। अेक की अदन काई ।।
अेक अेक पुजनिक ।। अेक ईध को सब माई ।।
फोज फोज सब अेक ।। सरब तळे घोडा हिंसे ।।
अेक परी बर जाय ।। अेक कूं श्वान न धींसे ।।
तो क्रणी प्राकम ईधक हे ।। अर्थ बेद के माय ।।
जात ईधक सुखराम के ।। जाती कमतो कवाय ।।२०।।

जाती की जात मे ही,एक का कोई आदर नही रखते और एक को पूज्यनीय मानते है । और एक सभी से अधिक रहता है । (उससे जाती के लोग सभी पूछकर काम करते है ।)और एक दूसरे को कोई पूछता भी नही । फौज–फौज सभी एक(जैसी ही)रहती है,सभी (सिपाहियों) के बैठनेके लिये घोडे,एक जैसे ही होते है ।(परन्तु वे लडाईमें गये और उनमेसे शूरवीर सिपाही, शूरवीरता दिखाकर रणक्षेत्रमे मरता है ।)उसे इन्द्र की परीयाँ शादी करके ले जाती है । और एक(कायरता से मरता है ।)उसे कुत्ते भी खिंचते नही है ।(ये सिपाही तो दोनो एक जैसे ही थे ।)तो जिसकी करणी और पराक्रम अधिक है ।(वह अधिक समझा जाता है ।) यह वेद में अर्थ है । जाती की जाती में एक अधिक है । जाती की जाती में एक कम है । ।।२०।।

मीठा भोजन ध्रक ।। पाय प्राणी दु:ख पावे ।।
सो गेणो सुण बाळ ।। पेर सुर्डो होय जावे ।।
मे मुंदी सिर्पाव ।। ध्रक सो सियाँ मुवा ।।
ऊंची संगत ध्रक ।। नर्क ईधकारी हूवा ।।
ज्हाँ ज्हाँ तोटो ऊपजे ।। सोई सोई तजीये धाम ।।

नफे बिना सुखराम के || ऊंच चीज किस काम ||२१||

भुक लगी है शरीर मे शक्कर की बिमारी है मीठा भोजन तैय्यार है परंतु उस मिठे भोजन ग्रहन करनसे स्वास्थ को नुकसान पहुँचता है व खानेसे खानेवाला प्राणी दु:ख पाता है ऐसे मीठे पकवान को धिक्कार है । स्वर्ण का दिखने मे सुंदर व वजनदार कान का गहना है परंतु कान नाजुक है व गहना पहनकर कान फट जाते है ऐसा गहना पहनने पे गहना दु:ख देता है उस गहने को धिक्कार है । ठंड्क बहोत है व महमुंदी याने दिखनेको बढिया बनाई हुयी रजाई ओढी है परंतु उससे ठंड्क रुकती नही व थंडी के कारण रजाई ओढनेवाला मरणे सरीखा दु:ख पाता है ऐसे रजाई को धिक्कार है । माया मे उंचे माने जानेवाले लोगो के साथ संगत की व वह संगत मोक्ष मे न पहुँचाते गर्भ मे चौऱ्यांशी लक्ष योनीमे,नर्क मे डालती है ऐसे उंचे लोगोकी संगत को धिक्कार है । इसलीये जहाँ जहाँ नुकसान होता है व प्राणी दु:ख पाता है ऐसे जगत के आँखो से कितनी भी उंची महंगी वस्तु रही तो भी वह वस्तु त्यागना चाहिये । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है बिना नफा देनेवाली याने तोटा उपजानेवाली वस्तु किसी के भी किसी काम की नही है ।।।२१।।

गधो गधे संग जाय || भेंस भेंस्यामे आवे ||
ऊंट ऊंट के संग || गाय गाया मे जावे ||
श्वान श्वान के संग || भेड भेडा संग होई ||
गेवर संग गजराज || सिंघ संग रहे न कोई ||
यूं नर नारी जक्त मे || संगत माजने होय ||
जात पाँत सुखराम के || कुळ कर्णी ले जोय ||२२||

(सभी लोग संसार में अपने जैसे,जैसे स्वयम है,वैसे ही मनुष्यों की लोग संगती करते है । जैसे स्वयं गांव के इस किनारे पर रहता हो,तो भी वह उसकी संगती करने के लिए,गाँव के इस किनारे से उस किनारे तक जाता है । उससे पूछने पर,की अरे,तू इतने रास्ते के मनुष्यो को छोडकर,तू यहाँ इसके पास आया,तो रास्ते मे दूसरे घर नही थे,या मनुष्य नही थे क्या?तो वह बोलेगा,कि मेरे मेल का यही है,इसलिये मै आया। इसी तरह) जानवरो मे एक गधे का झुंड है,एक ऊंट का झुंड है,एक गाय का झुण्ड है,एक कुत्तों कि टोली है ओर एक तरफ हाथी खडे है । तो वहाँ(एक गधा लाकर छोडने पर,वही बडे-बडे हाथी,उँट वगैरे जानवर छोडकर),गधे के ही झुण्ड मे दौडकर जायेगा(और कुत्ते को लाकर छोडा,तो गाय,भैंस जानवर को छोडकर,) कुत्तो के ही टोली मे जायेगा । वैसे ही भैस भी,(बडे-बडे हाथी वगैरे प्राणी छोडकर,)भैंस मे ही जाएगी । इसी तरह उँट,ऊंट के संग जाएगा,गाय,गाय के संग जाएगी । भेड,भेड के संग जाएगी । और हाथी,बडे हाथी के साथ मे जाएगा ।(भेड क्या,गाय क्या और उँट क्या,सभी अपनी-अपनी जाती मे जाकर मिलेंगे । उसी तरह मनुष्य अपने जैसे,अपने मेल के मनुष्यों के पास ही जाएगा । उसी तरह सिंह

अकेले ही रहता है । वह किसी के साथ नही जाता है । और किसी को साथ मे रखता भी नही है । इसी तरह संसार मे स्त्री-पुरूष अपने कुद्रती स्वभाव के अनुसार संगती को जाते है । और अपने कुल के कुल मे ही,जैसे मनुष्य जाते है,वैसे ही अपने जैसी करणी करनेवाला मनुष्य देखकर,(अपने करणी जैसा मनुष्य के पास,करणी देखकर) जायेगा । ऊंच वर्ण के तक भी नींच जाती के संगती मे जाते है । ।। २२ ।।

ग्यानी जळ अंग एक ।। बिच दुबध्या नही जागे ।।
जो कोई बर्ते लेहर ।। मिलत सो बार न लागे ।।
अष्ट धात अग्यान ।। ताव सें होय सो मेळा ।।
कर्मी बरतन फूट ।। लाख बिध हूवे न भेळा ।।
मुरख पथर काठ ज्यूं ।। फाटां पडे हे देस ।।
फिर जोडयाँ सुखराम के ।। अंतर मिले न लेस ।।२३।।

ज्ञानी और पानी,इनका(दोनो का)स्वभाव एक जैसा है । जैसे पानी अधिकतर(तो पानी से, स्वयं अलग नही हो सकता है।)कोई दुसरेने हाथसे या लाठी से मारकर अलग किया,तो उसका लहर जैसा होकर,पानी पुन: पानी मे मिल जाता है । पानीमे पानीको मिलने मे,समय नही लगता है । वैसे ज्ञानी अधिकतर तो दोनो मे दुविधा लगकर अलग होते नही है और यदी हो गये,तो वे पुन: एक दुसरे से मेल करने मे,समय नही लगाते है । और अज्ञानी जीव अष्ट धातू जैसे है ।(धातु का टुकडा अलग होकर,ऐसे अपने आप तो मिलता नही,परन्तु)वह ताव से पुन: मिल जाता है । (इसी तरह अज्ञानी जीव,एक दूसरे से झगडा करके,अलग हो जाते है, फिर उनके उपर धातू जैसा ताव पडा,तो कुछ संकट आया,या कोई दु:ख आया,या किसी चीज की गरज पडी,तो पुन: एक हो जाते है ।)परन्तु कर्मी जीव फुटे हुए(मिट्टी के)बर्तन जैसे है,वे मिट्टी के फुटे हुए बर्तन,कितनी भी लाखो विधी किए,तो भी पुन: जुटेंगे नही ।(वैसे ही कर्मी जीवो के मन,मिट्टी के फुटे हुए बर्तन जैसे,पुन: नही मिलते है ।)और मुर्ख जीव फुटे हुए पत्थर के जैसे है,या उली हुयी(फटी हुयी)लकडी के जैसे होते है । लकडी और पत्थर फुटे हुये,पुन: कोई एक जगह किया,तो जुट तो जाते है,परन्तु फुटी हुअी उनकी रेषा,उनके अन्दर रह जाती है । वह पुन: कुछ मिलती नही है ।(इसी तरह मुर्ख लोग होते है । कि एक बार बिगाड करके फुट गये और पुन: मिले या कोई मिला दिया । पत्थर और लकडी के जैसे उनके बीच मे पडा हुआ अंतर या रेखा जानेवाली नही । और अंतर का मन मिलनेवाला नही,ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ।।२३ ।।

ठाकूर रूठां सीस ।। गांव अेकई नर छाडे ।।
राजा कोप बिचार ।। मुलक सूं बाहेर काडे ।।
बादस्याहा सुण खंड ।। देवतो लोक छुडावे ।।

धमराय सिर कोप ।। नरक के माय पठावे ।।
ठाकुर राजा बादस्या ।। देव लग या दोड ।।
गुर रूठाँ सुखराम के ।। नही तीन लोक मे ठोड ।।२४।।

गाँव का मालिक यदी रुठ गया तो मनुष्य को सिर्फ उसका ही गाँव छोडना पडता और राजा ने यदि कोप किया तो वह अपने मुल्क से बाहर कर देता और बादशहा ने यदी कोप किया तो वह अपने खंड के बाहर निकाल देता। देव ने कोप किया तो देवता उसको देव लोक से निकाल देते। धर्मराय(यम)ने यदी कोप किया तो वह नर्क मे भेजता। इसलीये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ठाकुर(गाँव का मालिक) राजा, बादशहा और देव इनकी यहाँ तक ही दौड है । परंतु गुरु के रुठ जाने पर तीनो लोकोमे कही भी जीव को जगह नही मिलती और ऐसे बिना जगह मिलनेवाले जीव को ग्यानी ध्यानी वेद शास्त्र पुराण पित्तर भूत करके संबोधते है । ऐसे पित्तर भुत आत्माको रहने को तीन लोक मे यहाँ तक कि निच से निच नरकमे भी जगह न मिलने कारण अतृप्त होकर महादु:ख भोगते फिरते रहना पडता ।।।२४।।

अरध अर्ध सो हरफ ।। सीख ताँ पिडंत होई ।।
दिन मास पड बिच ।। भ्रम मोहो देत बिगोई ।।
माळी बन बिचार ।। सीचं ने: चे फळ लागे ।।
घणी निंद घट होय ।। सोय वोही नर जागे ।।
यूं जन लागे आद सूं ।। निभे अंत लग कोय ।।
तो ने: छे सुखराम के ।। आपई कर्ता होय ।।२५।।

कैवल्य मे कैसे भी अग्यानी मनुष्य रहा तो भी प्रतिदिन की आधा आधा अक्षर कैवल्य का सीखा पढा तो पंडीत याने ग्यानी हो जाता इसीतरह से प्रतिदिन के आधे तो महिने के पंद्रह इस तरह प्रति महिने पंद्रह अक्षर भी यदी सिखे तो उसका झूठे माया के सच्चा समजने का भ्रम निकल जाता व ग्यान समजनेपे परिणामत: उसका मायासे मोह निकल कर नाश हो जाता । माली बगीचा लगाता है और उसे पानी देता है जिस दिन पानी दिया उसी दिन तो पेड को फल नही लगता परंतु पानी देते देते निश्चीत ही उस पेड को फल लगता। ऐसे ही कैवल्य सिखते सिखते पुर्ण समज जाता। कितनी भी निंद लेनेवाला व्यक्ती हो तो भी कभी ना कभी तो वह निंदसे जागृत होता। इसी तरह कैवल्य भक्ती करनेवाले संत शुरु से ही लगे रहे और उनकी भक्ती अंत तक निभ गयी तो वह निश्चीत ही सतस्वरुप कर्ता हो जाता ।।।२५।।

।। इति ऊपदेश को अंग संपूरण ।।